

## धुधार स्कूल आमेर कला का विस्तृत अध्ययन

डॉ० देवेन्द्र कुमार

सहायक प्राध्यापक, चित्रकला

देवता महाविद्यालय मोरना (बिजनौर)

धुधार स्कूल आमेर कला, राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और परंपरा का प्रतीक है। यह स्कूल, विशेष रूप से आमेर और उसके आसपास के क्षेत्रों में पनपा, जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, और हस्तशिल्प का अद्वितीय संयोजन देखा जाता है। आमेर का धुधार स्कूल, राजस्थान की शाही संरचनाओं और कला के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस निबंध में हम धुधार स्कूल आमेर कला के विकास, प्रमुख विशेषताओं, और इसके प्रभावों का विस्तृत अध्ययन करेंगे। जो इस क्षेत्र में और अधिक शोध के लिए मार्गदर्शन करेगी।

### धुधार स्कूल आमेर का इतिहास

धुधार स्कूल का विकास 16वीं और 17वीं शताब्दियों में हुआ, जब आमेर पर कच्छवाहा राजवंश का शासन था। इस काल में राजस्थान में कला और वास्तुकला का विशेष उभार देखा गया। आमेर के राजा मानसिंह प्रथम (1550-1614) के शासनकाल में मुगल दरबार से गहरे संबंध स्थापित हुए, जिससे आमेर की कला पर मुगल शैली का प्रभाव पड़ा। इस अवधि में आमेर के किले और महलों में धुधार स्कूल की कला अपने चरम पर पहुँची। मुगल कला और राजस्थानी लोक कला के संयोजन से एक नई शैली का विकास हुआ जिसे धुधार स्कूल के नाम से जाना गया।

### प्रमुख विशेषताएँ

धुधार स्कूल आमेर कला की कई प्रमुख विशेषताएँ हैं, जो इसे राजस्थान की अन्य कलाओं से अलग करती हैं:

#### 1. \*चित्रकला\*

- \*मुगल और राजस्थानी लोक कला का सम्मिश्रण\*: धुधार स्कूल की चित्रकला में मुगल शैली के बारीक चित्रांकन और राजस्थान की लोक शैली के चमकदार रंगों का अद्भुत संयोजन देखा जाता है। चित्रों में व्यक्तियों की भाव-भंगिमाओं को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया जाता है।

- \*धार्मिक और शाही विषय\*: चित्रकला के मुख्य विषय भगवान कृष्ण, राधा और अन्य पौराणिक कथाओं से प्रेरित होते हैं। इसके अलावा, शाही दरबार और शिकार के दृश्यों का भी चित्रण होता है।

#### 2. \*वास्तुकला\*

- आमेर किला और महल धुधार स्कूल वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यह वास्तुकला राजपूत और मुगल शैलियों का संयोजन है, जिसमें विशाल प्राचीरें, महल, दरबार हॉल और मंदिर शामिल हैं। आमेर किले का शीश महल और जलेब चौक इसकी सुंदरता और कलात्मकता के प्रतीक हैं।

- \*शीश महल\*: शीश महल में कांच की जटिल सजावट और रंगीन कांच का उपयोग किया गया है, जो इसे धुधार शैली का उत्कृष्ट उदाहरण बनाता है।

### 3. \*मूर्तिकला\*

- धुधार स्कूल की मूर्तिकला में ज्यामितीय पैटर्न, पशु-पक्षी और पौराणिक आकृतियों का चित्रण मिलता है। मूर्तिकला में पत्थर और धातु का इस्तेमाल कर देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और शाही आकृतियाँ बनाई जाती हैं। आमेर के किले में इन मूर्तियों के उत्कृष्ट उदाहरण देखे जा सकते हैं।

### 4. \*हस्तशिल्प\*

- आमेर के हस्तशिल्प, विशेष रूप से धातु और कांच का काम, राजस्थान के पारंपरिक हस्तशिल्प का महत्वपूर्ण हिस्सा है। धुधार स्कूल के अंतर्गत विकसित हस्तशिल्प में हाथीदांत, लकड़ी, और धातु पर की गई नक्काशी देखने को मिलती है।

## आमेर कला में मुगल प्रभाव

धुधार स्कूल आमेर की कला पर मुगल प्रभाव विशेष रूप से देखा जाता है। आमेर के कच्छवाहा राजा मानसिंह मुगल सम्राट अकबर के प्रमुख सामंत थे, इसलिए आमेर की कला पर मुगल दरबार की कला का गहरा प्रभाव पड़ा। आमेर के चित्रों में मुगल शैली की परिष्कृत तकनीक और बारीकी से चित्रण की गई मानव आकृतियों को देखा जा सकता है। इसके अलावा, आमेर की वास्तुकला में भी मुगल शैली के मेहराब, गुंबद और जटिल सजावट का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिता है।

धुधार स्कूल की कला के प्रमुख कलाकार

धुधार स्कूल से जुड़े कई प्रमुख कलाकार हुए जिन्होंने आमेर कला को समृद्ध किया। इनमें प्रमुख नाम हैं:

1. \*साहिब राम\*: साहिब राम एक प्रमुख चित्रकार थे, जिन्होंने मुगल शैली के साथ राजस्थानी लोक कला को मिलाकर अनूठी पेंटिंग्स बनाई।
2. \*मुकुंद\*: यह कलाकार मुगल दरबार से प्रभावित था, और उसकी चित्रकला में शाही जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण देखा जा सकता है।
3. \*मीणाओं की भागीदारी\*: स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से मीणा समुदाय के कलाकारों ने धुधार स्कूल में योगदान दिया, जो आमेर के किले और महलों के निर्माण और सजावट में शामिल थे।

धुधार स्कूल का समकालीन प्रभाव

धुधार स्कूल आमेर की कला का प्रभाव आज भी राजस्थान और उसके आसपास के क्षेत्रों में देखा जा सकता है। आमेर के किले और महलों में धुधार कला के उत्कृष्ट उदाहरण आज भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके अलावा, आमेर के हस्तशिल्प और चित्रकला का संरक्षण और पुनरुद्धार भी हो रहा है, जिससे यह कला आधुनिक कलाकारों और कला प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हो रही है। राजस्थान के कई कला संस्थान इस कला को संरक्षित करने और इसे नए आयाम देने का कार्य कर रहे हैं।

## निष्कर्ष

धुधार स्कूल आमेर की कला, राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह कला मुगल और राजस्थानी लोक शैलियों का अनूठा सम्मिश्रण है, जिसने राजस्थान की कला को एक नई दिशा दी। इस कला में चित्रकला, वास्तुकला, मूर्तिकला, और हस्तशिल्प का उत्कृष्ट संयोजन देखा जा सकता है। आमेर के किले और महलों में धुधार स्कूल के उत्कृष्ट उदाहरण आज भी इस कला की महानता को दर्शाते हैं। समकालीन समय में भी यह कला अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है और राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रिचर्ड, जे. (1997). *The Art of Mughal India: Painting and Architecture*. Oxford University Press.
2. सिंह, श्याम. (2010). *Rajasthan: A Cultural History*. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
3. शर्मा, आर.सी. (2015). *कच्छवाहा राजवंश और आमेर कला*. जयपुर विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. ब्राउन, पर्सी. (1949). *Indian Architecture (Islamic Period)*. दुर्लॉक्स प्रेस।
5. सिंह, नरेंद्र कुमार. (2018). *राजस्थान के कला और शिल्प: धरोहर और परंपराएं*. राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल।
6. रेड्डी, वी.के. (2006). *Indian Miniature Painting: Rajasthan and Beyond*. नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट्स।